# कार्यस्थल पर महिलाएं

आशीष रायचूर

क्या एक स्त्री का कार्यस्थल में होना उचित है? लोगों के विचार इस विषय में भिन्न भिन्न हैं। कुछ कहते हैं ''हाँ'', जबकि अन्य कहते हैं ''नहीं, स्त्रियों को घर में रहना चाहिए और बाहर नहीं निकलना चाहिए।'' लोग इस बात को बल देने के लिए बाइबल का सन्दर्भ भी देते हैं।

परमेश्वर ने कहा है कि एक स्त्री की प्राथमिक बुलाहट एक पति की पत्नी, अपने बच्चों की माँ और अपने घर की देखभाल करने की है। परन्तु उसने यह नहीं कहा है कि एक स्त्री व्यापार में संलग्न न हो। हम परमेश्वर के वचन के अध्ययन में देखते हैं कि परमेश्वर ने इतिहास में स्त्रियों को विभिन्न क्षमताओं में घर से बाहर प्रयोग किया है। बाइबल कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं कहती कि एक स्त्री घर से बाहर काम के लिए न जाए। बाइबल के व्याख्यान में, यदि बाइबल किसी बात का विरोध नहीं करती है तब इसका अर्थ यह है कि हम अन्य सम्बन्धित वचनों के आध ार पर ठीक फैसला कर सकते हैं।

स्त्रियो, परमेश्वर आपको वहाँ चाहता है जहाँ लोग हैं, क्योंकि उनसे बोलने के लिए उसे आपकी वाणी, उन पर अपना प्रेम प्रकट करने के लिए आपके जीवन की आवश्यकता है। अत: अपने कार्यस्थल पर परिवर्तन लाएं, जहाँ परमेश्वर ने आपको रखा है।

**आशीष रायचूर**

© आशीष रायचूर, पास्टर
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
प्रथम प्रकाशन मुद्रित 2009 जानवरी

प्रबन्ध सम्पादक/मुख्य प्रकाशक : वैलेन्टीना हूबर्ट
सहायक सम्पादक : आरती रेचल यशायाह
अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

**पत्राचार का पताः**
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
सोभा जेड A216
जक्कूर, बंगलौर-560064
कर्नाटक, भारत

फोन + 91-80-23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

## निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का निशुल्क वितरण ऑल पीपुल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा सम्भव हुआ है।

# कार्यस्थल पर महिलाएं

# विषय-वस्तु

1. क्या महिलाओं को कार्यस्थल में होना उचित है? ........ 1

2. कार्यकारी महिलाएं अपने परिवार, कार्य और स्वयं की आत्मिकता को कैसे सन्तुलित कर सकती हैं? ........... 10

3. कार्यस्थल की चुनौतियों को महिलाएं कैसे सम्भालती हैं? ........................................................ 15

4. दोनों–जनों के कमानेवाले परिवारों के खतरे–उनको कैसे दूर करें? ........................................................ 20

# 1

# क्या महिलाओं को कार्यस्थल में होना उचित है?

जब पहली बार मैंने "कार्य के स्थान में महिलाएं" के विषय पर बोलने का विचार किया तो मेरी पत्नि ने मुझसे पूछा, "आप इस विषय पर बोलने के लिए अपने आपको कैसे योग्य समझते हैं?" मैंने उत्तर दिया, "मेरा तरीका साधारण है। मैं उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक बाइबल पढ़ूँगा, देखूँगा कि बाइबल इस विषय में क्या कहती है और उसी को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करूँगा।" अतः जो कुछ मैं लिख रहा हूँ वह मेरे अनुभव से नहीं है परन्तु पूर्णरूप से परमेश्वर के वचन के अध्ययन से है। बाइबल का तरीका इस विषय पर क्या कहता है, आइए इसे सीख कर जीवनों में लागू करें।

क्या महिलाओं को कार्यस्थल में होना उचित है? इस विषय पर लोगों के अलग-अलग विचार हैं। कुछ कहते हैं 'हाँ' जबकि कुछ कहते हैं, 'नहीं! महिलाओं को घर में रहना चाहिए और बाहर नहीं निकलना चाहिए।" लोग अपने विचारों को स्थापित करने के लिए बाइबल के पदों का भी सन्दर्भ देते हैं। परन्तु आइए इस विषय पर बाइबल का दृष्टिकोण देखें।

## महिलाओं के विषय में बाइबल का दृष्टिकोण

**फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, 'आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए** (उत्पत्ति 2:18)।

महिला को क्यों बनाया गया था? परमेश्वर ने महिला को दो साधारण कारणों के लिए बनाया–पुरुष की साथी और उसकी सहायता हेतु। वह उसकी "सहायिका" है। इब्रानियों में इसका अर्थ है, "विरोधी भाग अथवा समान पद का।" अतः महिला को पुरुष के नीचे रहने के

लिए नहीं परन्तु समानता में–एक समान भाग के रूप बनाया गया था। अतः स्त्री और पुरुष दोनों को एक समान बनाया गया था। अतः स्त्री और पुरुष के बीच का संबंध आपस में प्राकृतिक रूप से स्वीकार्य बनाया गया था। वे एक-दूसरे के "सहायक और साथी" थे। परन्तु पाप में गिरने के समय यह सब कुछ बदल गया।

**स्त्री से उसने कहा, ''मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उतपन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा''** (उत्पत्ति 3:16)।

परमेश्वर ने आरम्भ में पुरुष और स्त्री को एक समान बनाया था, परन्तु जिस दिन वे पाप में गिर गए, स्त्री पुरुष की अधीनता में आ गई और उसकी इच्छा और अभिलाषा उसके पति की ओर हो गई, और पुरुष ने उसके ऊपर प्रभुता करना आरम्भ कर दिया। अतः पाप के कारण आज हम गिरे हुए संसार में रह रहे हैं जहां पुरुष राज्य करता है। यह गिरी हुई स्थिति है न कि परमेश्वर द्वारा स्थापित स्थिति। शुभ संदेश यह है कि छुटकारे के काम में मसीह ने स्त्री को पुरुष की समानता में पुनः स्थापित कर दिया है। मसीह में न कोई पुरुष न कोई स्त्री है। "अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।" (गलतियों 3:28)।

अब पुरुष और स्त्री दोनों जीवन के अनुग्रह में समान अधिकारी (यूनानी "एक साथ सहभागी'') हैं।

**''वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं''** (1 पतरस 3:7)।

अब पुरुष को यह समझना चाहिए कि स्त्री परमेश्वर की बातों में पुरुष के बराबर है। परन्तु फिर भी बिना छुटकारे एवं गिरे हुए संसार में हम अभी भी देखते हैं कि पुरुष आज भी प्रभुता करता है। संसार का पूरी रीति से छुटकारा नहीं हुआ है इसीलिए हम इस प्रकार के ढांचे को देखते हैं।

## बाइबल की स्त्रियाँ

हम परमेश्वर के वचन के अध्ययन में देखते हैं कि सम्पूर्ण इतिहास में परमेश्वर ने विभिन्न क्षमताओं में स्त्रियों को उनके घर के बाहर प्रयोग किया है। कुछ उदाहरणों की सूची:

## मरियम, एक नबिया

**''और हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया; और सब स्त्रियां डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो लीं''** (निर्गमन 15:20)।

## स्त्रियों ने तम्बू बनाने में सहायता की

**''क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब जुगनू, मुंदरी और कंगन आदि सोने के गहने ले आने लगे, इस भांति जितने मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेंट के देनेवाले थे वे सब उनको ले आए। और जितनी स्त्रियों के हृदय में बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथों से सूत कात कातकर नीले, बैंजनी और लाल रंग के, और सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत को ले आईं। और जितनी स्त्रियों के मन में ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्होंने बकरी के बाल भी काते''** (निर्गमन 35:22,25,26,)।

## परमेश्वर चाहता है कि स्त्रियों को परमेश्वर का वचन सिखाया जाए

**''क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालक, क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर के परदेशी, सब लोगों को इकट्ठा करना कि वे सुनकर सीखें, और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय मानकर, इस व्यवस्था के सारे वचनों के पालन करने में चौकसी करें''** (व्यवस्थाविवरण 31:12)।

## दबोरा

दबोरा, एक नबिया, जो इस्रायल में एक न्यायी भी थी (न्यायियों 4:4)।

## याएल

याएल एक घरेलू स्त्री थी जिसने एक पुरुष के सिर में कीलें ठोकने के द्वारा इस्रायल को बड़ी विजय दिलाई (न्यायियों 4:21)।

## यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण हेतु परमेश्वर ने स्त्रियों को प्रयोग किया

**इस से आगे यरूशलेम के आधे जिले के हाकिम हल्लोहेश के पुत्र शल्लूम ने अपनी बेटियों समेत मरम्मत की** (नहेम्याह 3:12)।

## एस्तेर

एस्तेर एक रानी थी जिसने परमेश्वर के लोगों को छुटकारा दिलाया।

## स्त्रियों ने यीशु की सेवा की

नए नियम में हम उन स्त्रियों के बारे में पढ़ते हैं जिन्होंने यीशु की सेवा की।

**जब वह गलील में था, तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उस की सेवाटहल किया करतीं थीं; और और भी बहुत सी स्त्रियां थीं, जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं** (मरकुस 15:41)।

**इसके बाद वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा। और वे बारह उसके साथ थेः और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्टात्माओं से और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं, और वे यह हैं, मरियम जो मगदखीनी कहलाती थी, जिसमें से सात दुष्टात्माएं निकली थीं। और हेरोदेस के भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना और सुसन्नाह और बहुत सी और स्त्रियाँ : ये तो अपनी सम्पत्ति से उसकी सेवा करती थीं** (लूका 8:1-3)।

## लुदिया

**और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुनती थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए** (प्रेरितों के काम 16:14)।

लुदिया, एक नीले कपड़े की व्यापारी थी जो फिलिप्पी में थी। परमेश्वर ने उसे उसके घर को खोलने में सहायता की ताकि फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना है। ''वे बन्दीगृह से निकलकर लुदिया के यहाँ गए, और भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी, और चले गए'' (प्रेरितों के काम 16:40)।

## अक्विला और प्रिस्किल्ला

**''इस के बाद पौलुस अथेने को छोड़ेकर कुरिन्थुस में आया। और वहाँ अक्विला नाम एक यहूदी मिला, जिस का जन्म पुन्तुस का था; क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी, सो वह उन के यहाँ गया। और उसका और उन का एक ही उद्यम था; इसलिये वह उन के साथ रहा, और वे काम करने लगे, और उन का उद्यम तम्बू बनाने का था। और वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था''** (प्रेरितों के काम 18:1-4)।

अक्विला और प्रिस्किल्ला तम्बू बनाने वाले थे–एक व्यापारी युगल जो पौलुस की सेवा में साझीदार थे। कम से कम तीन जगह पर पौलुस ने उन्हें अपने सहकर्मी करके सम्बोधित किया है (रोमियों 16:3, 1 कुरिन्थियों 16:19, 2 तीमुथियुस 4:19)।

## फीबे, यूनिवास और अन्य स्त्रियाँ

**मैं तुम से फीबे की, जो हमारी बहिन और किंखिया की कलीसिया की सेविका है, बिनती करता हूँ कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन हो, उस की सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की बरन मेरी भी उपकारिणी हुई है। प्रिसका और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। उन्होंने मेरे प्राण के लिये अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं, बरन अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी उन का धन्यवाद करतीं हैं। और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उन के घर में है। मेरे**

**प्रिय हपैनितुस को जो मसीह के लिये आसिया का पहिला फल है, नमस्कार। मरियम को जिस ने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार। अन्द्रुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहिले मसीह में हुए थे, नमस्कार** (रोमियों 16:1-7)।

फीबे एक कलीसिया में डीकन थी और कलीसिया के काम की जिम्मेदार थी। यूनियास एक महिला प्रेरित थी जो पौलुस की सहकर्मी थी। कुछ अन्य स्त्रियाँ भी थीं जो पौलुस के काम में सहायक थीं जिनके विषय में पौलुस ने लिखा "वे स्त्रियां जिन्होंने सुसमाचार में मेरी सहायता की है" (फिलिप्पियों 4:3)।

यह एक उदाहरण है कि परमेश्वर ने अपने कार्य में महिलाओं को, उनके घरेलू रीति से बाहर निकालकर उन्हें प्रयोग किया।

## एक स्त्री की प्रारम्भिक बुलाहट

बाइबल इस विषय में बिल्कुल स्पष्ट है कि एक स्त्री की प्रारम्भिक बुलाहट अपने पति की पत्नी, अपने बच्चों की माँ और घर की देखभाल करने वाली बने।

**इसलिए मैं यह चाहता हूँ, कि जवान विधवाएं ब्याह करें; और बच्चे जनें और घरबार संभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें** (1 तीमुथियुस 5:14)।

"घर का मार्गदर्शन" ओइकोडस्पोटिओ (oikodespoteo) (यूनानी)= घर का मुखिया (जैसे राज्य करना) घर का मार्गदर्शन करना!

**ताकि वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने अपने पति के आधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए** (तीतुस 2:4, 5)।

"घर की देखभाल करने वाली" 'ओइकोरोस (Oikouros) (यूनानी) जो (Oilkos) "ओइकोस" शब्द से आया है (एक निवास, एक परिवार, एक घर) और 'यूरोस' (Uros) (एक रक्षक)।

अतः ओइकोरोस (Oikourous) (यूनानी)=घर पर रहने वाला, अर्थात् घर को चलाने वाला (घर का एक अच्छा रक्षक)।

एक स्त्री को अपने घर के कामों का प्रबन्ध करना चाहिए और घर का अगुवा होना चाहिए। वह यहाँ कैसे ठीक से सन्तुलन बनाए रखे? तब क्या एक महिला का घर से बाहर काम में संलग्न होना, बाहर काम करना उचित है? उत्तर 'हाँ' है।

## कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए आवश्यक बातें

- बाइबल में स्पष्ट रूप से कहीं भी नहीं लिखा है कि महिलाएं घर से बाहर कार्यस्थल पर न जाएं। बाइबल के व्याख्यान में यदि बाइबल किसी बात का विरोध नहीं करती है तो इसका अर्थ है परमेश्वर इससे सम्बन्धित अन्य वचनों के परिपेच्छ में हमें ठीक फैसला लेने की अनुमति दे रहा है।

  उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारा चंगा करने वाला परमेश्वर हूँ"। परन्तु उसने हमसे यह नहीं कहा कि हम दवाईयां न लें और चिकित्सक के पास न जाएं। परन्तु कुछ लोग इसका गलत अर्थ निकालते हैं। हमें चंगाई के लिए परमेश्वर की ओर देखना है, परन्तु दवाईयाँ खाना और बीमारी के समय डाक्टर के पास जाना गलत नहीं है। इसी प्रकार से परमेश्वर ने कहा है कि एक स्त्री की प्रारम्भिक बुलाहट अपने पति की पत्नी, बच्चों की माँ और घर की देखभाल करने की है। परन्तु उसने नहीं कहा कि एक स्त्री को व्यापार में सम्मिलित होने की आवश्यकता नहीं है। अतः वचन का गलत व्याख्यान न करें।

- अनुग्रह के वरदान लिंग के आधार पर नहीं दिए गए।

**और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न बरदान मिले हैं तो जिसको भविष्यवाणी का वरदान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाले हो; तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे** (रोमियों 12:6-8)।

ऐसी महिलाएं हैं जिनके पास अगुवाई सेवा, भविष्यवाणी और आर्थिक योग्यता के वरदान हैं। यह वरदान लिंग के आधार पर नहीं दिए गए। इन वरदानों का उपयोग स्पष्ट रूप से घर के बाहर की परिस्थितियों में किया जाता है, सम्भवत् कार्य स्थल पर!

नीतिवचन 31 में एक स्त्री की कुशलताएं उसके घर के लिए ही नहीं वर्णित की गई हैं बल्कि घर के बाहर की गतिविधियों में प्रकट हैं, उनमें से कुछ तो उसके व्यापार में संलग्न होने को प्रकट करती है। यह इसलिए है कि उसे इसके लिए परमेश्वर के द्वारा वरदान और अनुग्रह दिया गया है।

**वह किसी खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है; और अपने परिश्रम के फल से दाख की बारी लगाती है। वह अटेरन में हाथ लगाती है, और चरखा पकड़ती है। वह सन के वस्त्र बनाकर बेचती है; और व्यापारी को कमरबन्द देती है** (नीतिवचन 31:16,19,24)।

- उस स्थिति में जब पुरुष ने अपने परिवार की जिम्मेदारी छोड़ दी है।

यह उस परिस्थिति में भी है जब एक पिता अनुपस्थित रहता और पति खो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में, यदि एक स्त्री के बच्चे हैं जिनका पालन पोषण करना है, उसके पास स्वतन्त्रता है कि वह जिम्मेदारी ले और बाहर जाकर कमाए, घर का मार्गदर्शन और प्रबन्ध

करे। ''इसलिये मैं यह चाहता हूं, कि जवान विधवाएं ब्याह करें; और बच्चे जनें और घरबार संभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें।'' (1 तीमुथियुस 5:14) और यह आशा नहीं कर सकते कि वह घर बैठी रहे और कौवे उसे भोजन खिलाएं।

- उस परिस्थिति में जब कि आर्थिक आवश्यकताएं अधिक हों।

यदि पति घर पर रहता है और काम नहीं करता है अथवा वह जो कुछ कमाता है परिवार के लिए पर्याप्त नहीं है तब स्त्री को बाहर जाने की आवश्यकता है और काम करके आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करके घर का प्रबन्ध करे!

- बाइबल कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं कहती है कि स्त्रियों को कार्यस्थल में काम नहीं करना चाहिए।
- परमेश्वर ने कहा है कि एक स्त्री की प्रारम्भिक बुलाहट अपने पति की पत्नि, अपने बच्चों की माँ और घर की देखभाल करने की है। परन्तु उसने यह नहीं कहा है कि एक स्त्री को व्यापार में संलग्न होने की आवश्यकता नहीं है।

# 2

# कार्यकारी महिलाएं अपने परिवार, कार्य और स्वयं की आत्मिकता को कैसे सन्तुलित कर सकती हैं?

पुरुषों की अपेक्षा कार्यकारी स्त्रियों के लिए परिवार, कार्य और उनकी स्वयं की आत्मिकता सन्तुलित करना एक बड़ी चुनौती है। पुरुष काम से वापस घर आते हैं और आशा करते हैं कि उनकी सेवा की जाए। परन्तु कार्यकारी स्त्रियाँ न केवल काम के लिए बाहर जाती हैं बल्कि वापस घर आकर पुन: काम में जुट जाती हैं ताकि अपने पति और बच्चों की सेवा सकें!

## परमेश्वर की दृष्टि में एक स्त्री का एक मूल्य है

स्त्रियों को यह अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर उनके व्यक्तिगत मूल्य को समझता है बिना लिंग भेद के। उत्पत्ति 3:16 के अनुसार, मनुष्य के पाप में गिरने के कारण एक श्राप स्त्री पर आया और वह है कि उसकी अभिलाषा उसके पति की ओर होगी! इसके परिणामस्वरूप, प्रत्येक स्त्री अपनी पहचान के स्रोत हेतु अपने पति की ओर देखती है। वह उसका अन्तिम नाम भी अपने साथ जोड़ती है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसका पूरा संसार, उसका स्वयं का मूल्य भी उसी की ओर से आता है!

स्त्रियो, अपनी आंखें अपने पति की ओर से हटाकर परमेश्वर की ओर लगाएं क्योंकि वह एक व्यक्ति के रूप में आपका मूल्य जानता है। आपकी अभिलाषाएं परमेश्वर की ओर होनी चाहिए। अपने मूल्य और पहचान के लिए उसकी ओर देखें!

**अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो** (गलतियों 3:28)।

परमेश्वर के राज्य में कोई लिंग भेद नहीं है। स्त्रियाँ और पुरुष छुटकारा पाए हुए समान लोग हैं और आशीषें पाने, अभिषेक, वरदान, बुलाहट और सेवा के पद आदि में जो परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं।

**सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह का सिर परमेश्वर है। तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के हैं। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है, परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं।** (1 कुरिन्थियों 11:3,11,12)।

ठीक इसी प्रकार से पुरुष भी स्वेच्छा से अपने आप को मसीह की अधीनता में लाता है, अथवा जैसा मसीह भी, पिता की समानता में होते हुए भी, इस पृथ्वी पर उसने स्वेच्छा से अपने आपको पिता की इच्छा के अधीन कर दिया। इसी प्रकार एक स्त्री भी अपने पति की अधीनता में रह सकती है। इससे उसकी पहचान हल्की नहीं पड़ती न ही वह किसी भी रीति से पुरुष से नीचे गिनी जाती है। पुरुष और स्त्री प्रभु में एक दूसरे पर निर्भर हैं (1 कुरिन्थियों 11:11)। और दोनों पुरुष और स्त्री अपना जीवन, पहचान और अन्य सभी चीजें प्रभु से प्राप्त करते हैं।

## अपने पहले प्रेम को गले लगाएं

स्त्रियो, आपका प्रथम प्रेम आपका पति नहीं है! आपका प्रारम्भिक उद्देश्य परमेश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है।

**फिर जब वे जा रहे थे, तो वह एक गांव में गया, और मार्था नाम एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। और मरियम नाम उस की एक बहिन थी; वह प्रभु के पांवों के पास बैठकर उसका वचन सुनती थी। पर मार्था सेवा करते करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी; हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? सो उस से कह, कि मेरी सहायता करे। प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है** (लूका 10:38-41)।

इस भाग में, मार्था एक घरेलू स्त्री का प्रतिरूप है जो खाना बनाने और यीशु की सेवा करने में व्यस्त थी। परन्तु यीशु ने कहा कि वह सब कुछ छोड़ कर उसके चरणों के पास बैठे, और वह करे जो मरियम कर रही है! स्त्रियो, आपकी प्राथमिकता है कि आप पहले 'मरियम' बनें उसके बाद मार्था बनें। जी हाँ, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप मरियम बन जाएं और यीशु के चरणों में बैठ जाएं और अपने पति को घर का काम करने के लिए मार्था बना दे। यह अपनी जिम्मेदारी में असफलता है! आपको ये दोनों बनना है!

## अपनी प्राथमिक बुलाहट पत्नी, माँ और घर की देखभाल करने की अपनाएं।

बहुत सी कामकाजी स्त्रियों के लिए यह बड़ी चुनौती है। कार्यालय में स्त्रियों को प्रतिमाह उनके काम के लिए वेतन और कुछ उपहार तथा पदोन्नति मिलती है। जिससे उन्हें अपनी उपलब्धियों का ज्ञान रहता है। दूसरी ओर घर पर स्त्रियों को इनमें से कुछ नहीं मिलता है! परन्तु यदि स्त्रियाँ इस प्राथमिक बुलाहट में चूक जाती हैं तो कार्यस्थल की सफलता का कोई लाभ नहीं है।

**नोट:** यदि आप विवाहित नहीं हैं तो अब तक यह आप पर लागू नहीं होता है। अथवा आप उम्र में आगे बढ़ चुकी हैं तो यह कुछ ऐसा है जो आप पहले ही कर चुकी होंगी।

## मसीह की देह में अपनी बुलाहट अपनाएं

स्त्रियो, उससे पहले कि आप अपनी कार्यस्थल की बुलाहट को अपनाएं आपको यह याद रखना आवश्यक है कि प्रत्येक स्त्री का मसीह की देह में एक स्थान है। स्त्रियाँ इसे भूल जाती हैं! नजरअन्दाज करती हैं। कार्य के लिए निकल जाती हैं! आज बहुत सी खोई हुई माताएं मसीह की देह में हैं। उन स्त्रियों को जो जवान स्त्रियों के लिए नमूना होना चाहिए वे परमेश्वर के भवन से गायब हैं क्योंकि वे बाहर काम करने में व्यस्त हैं। प्रत्येक स्त्री के लिए मसीह की देह में परमेश्वर के द्वारा नियुक्त सेवा है। उस काम को ढूँढ़ें और उसे मसीह की देह में पूरा करें!

# कार्यस्थल की बुलाहट को अपनाएं

वे स्त्रियाँ जो कार्यस्थल पर कार्य हेतु बुलाई गई हैं वे परमेश्वर के राज्य में अपने कार्य की बुलाहट को अपनाने, स्वीकार करने और उसे पूरा करने के द्वारा एक बड़ी सहायता सकती हैं।

## व्यवहारिक निर्देश

- अपने हृदय को समझें कि वह कहाँ है—यदि आपका हृदय घर पर सन्तुष्ट है तो गलत नहीं है यदि आप का हृदय स्वयं काम के लिए उत्साहित करता है तो शायद यह कुछ ऐसा है जिस पर आपको विचार करना चाहिए।
- अपने वरदान और बुलाहट को जानें—क्या परमेश्वर ने आपको प्रशिक्षित किया है और वरदान दिया है ताकि आप कार्य कर सकें। तब उसे बर्बाद न करें जो परमेश्वर ने आपको दिया है।
- आप अपनी प्राथमिकताएं जानती हैं— जबकि यह ठीक हो सकता है कि आपकी इच्छा काम करने की है और आपको इसका वरदान भी हो सकता है, तौभी यह सम्भव हो सकता है कि आप कुछ समय के लिए अपने बच्चों की देखभाल के लिए समर्पित हों। यह उस समय और भी आवश्यक हो जाता है जब आपके बच्चे बहुत छोटे हों। आप बलिदान पूर्ण जीवन के उन दिनों को अपने बच्चों की देखभाल में समर्पित कर सकती हैं बजाए काम करने के।
- अपनी सीमाएं पहिचानें – हम सब अपनी अपनी क्षमाताएं जानते हैं कि बिना टूटे हुए हम कितना खिंचाव सह सकते हैं। आपको अपनी सीमाएं पहचानना है। एक पत्नि, मां और घर की देखभाल करते हुए एक कामकाजी महिला होना बड़ी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। यदि आपकी क्षमता लचीली है तो आप-ऐसा कर सकतीं हैं। अन्यथा अपनी सीमा में ही रहें।

यदि परमेश्वर ने आपको काम के लिए बुलाया है तो अपराध बोध न महसूस करें क्योंकि परमेश्वर ने आप को वरदान और अनुग्रह दिया

है, जिसका अर्थ है कि वह आपको कार्यस्थल पर चाहता है। अत: उस अवसर का प्रयोग करें। यदि आपको घरेलू महिला के रूप में बुलाया गया है तो आप अपने आप को हीन न समझें कि आप के पास "प्रबन्धक" अथवा "मुख्य प्रशासनिक अधिकारी" आदि की उपाधियाँ नहीं हैं केवल पत्नी और मां ही है। यदि आप अपना पहला प्रेम परमेश्वर और प्राथमिक बुलाहट को अपनाएंगी तो आपका प्रतिफल बड़ा होगा। वह आपसे केवल इतना ही चाहता है। केवल इतना याद रखें कि आपमें से प्रत्येक को अपनी व्यक्तिगत बुलाहट और उसकी इच्छा अपने जीवन में पूरी करनी है।

- अपना पहला प्रेम अपनाएं– परमेश्वर
- अपनी प्रारम्भिक बुलाहट पत्नि, मां और घर की देखभाल करने की अपनाएं और उसे पूरा करें।
- मसीह की देह में अपनी बुलाहट अपनाएं।
- अपने कार्यस्थल की बुलाहट अपनाएं।

# 3

# कार्यस्थल की चुनौतियों को महिलाएं कैसे सम्भालती हैं?

## तनाव

यह भाग पुरुष और स्त्रियों दोनों पर लागू होता है। हम सब तनाव का अनुभव करते हैं क्योंकि हमारे पास घर में और कार्यस्थल दोनों जगह पर जिम्मेदारियां हैं। अपने जीवन को देखकर, जहाँ मुझे घर, व्यापार और कलीसिया का प्रबंध करना पड़ता है, दो बातें ऐसी हैं जिससे मुझे तनावमुक्त होने में और दवाव के साथ सहन करने में सहायता मिलती है:

- प्रभु पर निर्भर रहना सीखना

**जिसका मन तुझ में धीरज घरे हुए है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है** (यशायाह 26:3)।

"समस्याओं की स्थिति" के अस्तित्व का इन्कार किए बिना–उन परिस्थितियों में बने रहने की बजाए–हमें प्रभु पर बने रहने की आवश्यकता है जो उन से बड़ा है। वह ऐसा राजा है जो तूफानों से भी ऊपर है, अतः उन तूफानों और लहरों पर रहने की बजाए, जब हम राजा की ओर देखते हैं जो उनके ऊपर है, तब वह हमें पूर्ण शान्ति में रखता है। कभी-कभी मेरा धैर्य भी टूट जाता है और क्रोधित हो जाता हूँ परन्तु मैं ऐसी स्थिति में बहुत लम्बे समय तक नहीं रहता हूँ। मै चुपचाप बैठ जाता हूं और अपना मस्तिष्क प्रभु की ओर लगाता हूँ जो तूफानों से ऊपर है।

- परमेश्वर के वचन पर मनन करना

परमेश्वर के वचन पर मनन करना तनाव दूर करने का सबसे अच्छा तरीका है। यदि किसी क्षेत्र में आपको बहुत तनाव और दवाव

है, तब उस स्थिति में परमेश्वर के वचन पर मनन करें और जब आप ऐसा करेगें तब यह आपके अन्दर डर की जगह विश्वास उत्पन्न करेगा। विश्वास से हियाब उत्पन्न होता है, जिससे आप को तनावमुक्त होकर शान्ति मिलती है।

## प्रतिस्पर्धा

- स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एक अच्छी बात है।

जब आप 100 मीटर की दौड़ दौड़ते हैं, तो चाहे आप नया जन्म प्राप्त, आत्मा से भरे हुए, अन्य भाषा में बातें करने वाले, शैतान को भगाने वाले मसीही क्यों न हों, आप अन्य प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वालों के साथ हाथ पकड़कर नहीं दौड़ेंगे। आप को आरम्भ से अन्त तक सर्वोत्तम उत्पन्न करना है। ठीक इसी प्रकार से, अपने काम के स्थान पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करना अच्छी बात है। परन्तु ऐसा ठीक तरह से करें और अपने इनाम के लिए परमेश्वर की ओर देखें।

**हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उन की आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो** (कुलुस्सियों 3:22-24)।

- ईमानदारी और उचित रूप से कार्य स्थल पर प्रतिस्पर्धा करना कोई गलत नहीं है। सच्चाई बनाए रखें।

## पुरुष को बढ़ावा देना और लिंग भेद

बहुत सी संस्थाओं के पास बिना लिखित नियम होते हैं जिनमें वे केवल पुरुषों को ही बढ़ावा देते हैं। बहुत सी स्त्रियाँ इस लिंग भेद का अनुभव करती हैं। यहाँ तक कि स्त्रियों को समान पद पर होते हुए भी पुरुषों के समान वेतन नहीं दिया जाता है। यदि आप इस प्रकार की स्थिति में हैं तो न झगड़ें। केवल परमेश्वर की ओर देखें और याद रखें कि उन्नति

परमेश्वर की ओर से आती है और परमेश्वर आपके हाथों के कार्यों को सम्पन्न बनाने के योग्य है। वह जानता है कि किस को आपके मार्ग में से हटाकर आपको ऊपर उठाए।

**क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पच्छिम से, न उत्तर से न दक्षिण से, परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है** (भजन संहिता 75:6, 7)।

## यौनाचार की परीक्षाएं

क्या आप ऐसी परिस्थितियों में हैं जहाँ आप जब तक अपने मालिक के लिए यौनाचार न करें तब तक आपकी पदोन्नति नहीं होगी? जब इन क्षेत्रों में आपके ऊपर दबाव हो, तब आप दृढ़ हों और “न” करें। तब झुकें नहीं और समझौता न करें। शुद्ध रहें। साफ रहें। वे स्त्रियाँ जो विवाहित हैं, अपने पतियों के प्रति विश्वासयोग्य रहें, चाहें कुछ भी क्यों न हो।

- परमेश्वर आपके कार्यस्थल पर आपका रक्षक है।

  **परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है, तू मेरी महिमा और मेरे मस्तक का ऊँचा करने वाला है** (भजन संहिता 3:3)।

  **यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूँ? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किसका भय खाऊँ?** (भजन संहिता 27:1)।

- मर्यादापूर्ण वस्त्र पहनें, यौन सांकेतिक वस्त्र न पहनें और मर्यादापूर्वक व्यवहार करें।

  **ताकि वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने अपने पति के आधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए** (तीतुस 2:4,5)।

## व्यवसाय का चुनाव

कुछ स्त्रियाँ उत्सव प्रबन्धन, मनोरंजन एवं फैशन डिजाइन जैसे कार्यों में संलग्न होती हैं। आप ऐसे व्यवसायों से केवल इसलिए न भागें कि वहां चारों ओर पाप है। चाहे आप इसे पसन्द करें या न करें बुराई लगभग सभी उद्योगों और निगमों में व्याप्त है। यीशु ने हमसे कहा है कि संसार में रहें इससे भागे नहीं। अपने व्यवसाय में इस सिद्धान्त को लागू करें।

**मैंने तेरा वचन उन्हें पहुँचा दिया है, और संसार ने उनसे बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। मैं यह बिनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख। जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं! सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर। तेरा वचन सत्य है। जैसे तूने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा** (यूहन्ना 17:14-18)।

यदि आपका व्यवसाय आपको विश्वास, आचरण, चारित्रिक गुणों और सच्चाई पर समझौता करने के लिए विवश करता है, तब आप को उस पद से हट कर उसी उद्योग में किसी दूसरे पद पर काम करना चाहिए। अपने समर्पण और यीशु के लिए खड़े रहें। कुछ करें! अपनी संस्था में बदलाव लाने वाली स्त्री बनें।

यीशु आपको वहाँ चाहता है जहाँ लोग हैं क्योंकि उसे आपकी आवाज की आवश्यकता है कि वह उनसे बातचीत कर सके, आपके हाथों की आवश्यकता है ताकि वह उन्हें छू सके और आपके जीवन की, ताकि वह अपना प्रेम उन पर प्रकट कर सके। अत: वहीं रहें और कुछ परिवर्तन लाएं चाहे वातावरण कितना भी चारित्रिक चुनौतीपूर्ण क्यों न हो। तभी यह निश्चय कर लें कि आप आत्मिक रूप से इतनी सुदृढ़ हैं कि आप ऐसे वातावरण को प्रभावित कर सकेंगी, बिना स्वयं प्रभावित हुए।

- समस्यापूर्ण स्थितियों पर बने रहने की अपेक्षा, प्रभु पर ध्यान करें और वह आपको पूर्ण शान्ति में रखेगा।
- परमेश्वर के वचन पर मनन करने से तनावमुक्त होते हैं।
- स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एक अच्छी बात है।
- उन्नति परमेश्वर की ओर से आती है और वह आपके हाथों के कामों को सम्पन्न बनाने के योग्य है।
- आपके कार्यस्थल पर परमेश्वर आपका रक्षक है।
- मर्यादापूर्ण वस्त्र पहनें, यौनाचार्य को आकर्षित करने वाले वस्त्र न पहनें और मर्यादापूर्ण व्यवहार करें।
- अपने कार्यस्थल में यीशु और अपने समर्पण हेतु खड़े हों।
- कुछ परिवर्तन लाएं, चाहे वातावरण कितना भी चारित्रिक चुनौतीपूर्ण क्यों न हो।

# 4

# दोनों-जनों के कमानेवाले परिवारों के खतरे–उनको कैसे दूर करें?

जब पति और पत्नी दोनों काम करते हैं तो इसके कुछ खतरे और कमियां हैं।

## खतरे

### आपसी निर्भरता की बजाए आत्म-निर्भरता

जब पति अथवा पत्नी के अपने स्वयं के बैंक खाते, कारें, क्रैडिट कार्ड्स आदि हो जाते हैं तो आपसी निर्भरता की बजाय वे आत्म–निर्भरता महसूस करते हैं।

### पति-पत्नी के बीच प्रतिस्पर्धा

शिक्षित पति–पत्नी, जो एक ही उद्योग में लगे हैं, आपस में तुलना और प्रतिस्पर्धा आरम्भ कर देते हैं। यह प्रतिस्पर्धा वेतनों और पदों में होती है।

### कार्यस्थल से ही विवाह करते हैं

कुछ पति–पत्नी वेदी के सम्मुख कहते हैं "हाँ मैं करूँगा" और जब वे कार्य करने के लिए अगले दिन जाते हैं तो कहते हैं "मैं यह भी करूँगा"। वे अपना सारा समय काम पर गुजारते हैं और काम से ही विवाह कर लेते हैं।

### अधिक धन परन्तु कम समय

क्या आप अधिक धन चाहते हैं अथवा महत्वपूर्ण कार्य मिलकर करना चाहते हैं? यहाँ पर पति–पत्नी को चुनाव करना चाहिए। कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें पैसा नहीं खरीद सकता है। पैसे से हम अच्छी पति–पत्नी और अच्छे बच्चे नहीं खरीद सकते हैं। अच्छा विवाह एक साथ समय बिताने

से बनता है। अच्छे बच्चों को सिखाया, बढ़ाया और प्रशिक्षित किया जाता है।

## महिलाओं के ऊपर अधिक भार

जहाँ पति-पत्नी दोनों कमाते हैं यह सम्भव है कि स्त्रियां अधिक कार्यभार से दबी रहती हैं। बाहर और घर में दोनों जगह उन्हें काम करना पड़ता है जिससे वे थकित रहती हैं। यह महत्वपूर्ण बात है कि जब पति-पत्नी दोनों काम करते हैं तो पति को भी घरेलू कामों में अवश्य ही हाथ बँटाना चाहिए, ताकि उसकी पत्नी को आवश्यकता से अधिक भार न उठाना पड़े।

## दोनों जनों के कमाने वाले परिवारों को उठाने के लिए आवश्यक कदम

## सही मूल्य समझें

यदि आप सारा संसार प्राप्त कर लेते हैं और अपना घर, परिवार और बच्चे खो देते हैं तब आप सही मूल्य खो रहे हैं। हमारे समय के बहुत से प्रसिद्ध उद्योगपतियों में अधिक ऐसे हैं जिनकी तलाक हुई है, दूसरी अथवा तीसरी शादियां हुई हैं। वे अपने उद्योगों में परिवर्तन लाए होंगे, बड़े-बड़े निगमों की स्थापना की है और संसार में प्रसिद्धि पाई है, परन्तु उनके परिवार टूटे हुए हैं। एक व्यक्ति अचम्भा करेगा कि वे एक संस्था जिसे विवाह कहते हैं क्यों नहीं ठीक से चल पाए जिसमें केवल एक पत्नी ही होती है। यह दुख की बात है कि वे अपने घरों का ठीक से प्रबन्ध नहीं कर पाए। आपको यह चुनाव करना है कि अधिक मूल्यवान क्या है- एक अद्‌भुत विवाह और धर्मी बच्चे, अथवा सांसारिक प्रसिद्धि।

## समय को सन्तुलित करने का विवेकपूर्ण प्रयास करें

यद्यपि चुनौतियां और दवाब अधिक हैं, हमें समय और शक्ति का ठीक से उपयोग करने का विवेकशील प्रयत्न करना चाहिए-परमेश्वर के साथ समय, घर पर समय, परमेश्वर के घर में समय और कार्यस्थल पर समय। सभी मुझे इस विषय में याद दिलाती रहती है और मैं सदैव इस पर ध्यान देता हूँ।

## दोनों की सामर्थ का विकास करना

**एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा; परन्तु हाय उस पर जो अकेला होकर गिरे और उसका कोई उठानेवाला न हो। फिर यदि दो जन एक संग सोएं तो वे गर्म रहेंगे, परन्तु कोई अकेला क्योंकर गर्म हो सकता है? यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो हो, परन्तु दो उसका साम्हना कर सकेंगे। जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती** (सभोपदेशक 4:9-12)।

जब दो जनो की शक्ति होती है तो यह दुगनी हो जाती है और हम दुगना कार्य कर लेते हैं। यदि पति-पत्नी सारे क्षेत्र में एक हो जाएं तो वे अधिक कार्य कर लेंगे, आगे बढ़ेंगे, ऊपर उठेंगे जब कि वे अकेले ऐसा नहीं कर सकते हैं। पतियों को भी अपने घर की जिम्मेदारियों को पूरा करना सीखना चाहिए विशेषकर जब उनकी पत्नियाँ बाहर काम करतीं हैं।

हमारे अपने जीवनों में, यद्यपि एमी एक प्रशिक्षित मेडीकल डॉक्टर हैं, और अपनी स्नात्कोत्तर की उपाधि हेतु पढ़ रही थी, उसने यह फैसला किया कि वह बच्चों की खातिर अपने व्यवसाय को रोके रखेगी जब तक कि बच्चे बड़े न हो जाएं। यह आसान नहीं है और कई बार यह बड़ा दुखदायी होता है। फिर भी, अब जबकि दोनों बच्चे पूर्णकालिक स्कूल में हैं, एमी ने पुनः कार्यस्थल पर धीरे-धीरे कदम बढ़ाना आरम्भ किया है, यह निश्चित करते हुए कि उसने अपने बच्चों के लिए अपना भाग पूरा किया और बलिदान किया जब उन्हें उसकी आवश्यकता थी।

- सही मूल्य समझें
- समय को सन्तुलित करने का विवेकपूर्ण प्रयास करें।
- दोनों की सामर्थ का विकास करें।

नोट

All Peoples Church & World Outreach, Bangalore, India, has extended its ministry by launching its Bible College & Ministry Training Center (APC-BC&MTC) in August 2005. APC-BC&MTC equips, trains and releases faithful men and women to impact villages, towns and cities in India and other nations, for Jesus Christ.

**APC-BC&MTC offers 2 programs:**

- The two-year and three-year **Bible College** programs are for full-time students and provides spiritual and practical ministry training along with academic excellence. The programs are designed to equip and empower students to successfully fulfil the call of God upon their lives. Upon completing the two-year program students will receive a **Diploma in Theology & Christian Ministry (Dip.Th.&CM).** The three-year program will lead to a **Bachelor's Degree in Theology & Christian Ministry (B.Th.&CM)**.

- The **Practical Ministry Training** is for graduates from the Bible College who desire to undergo practical training. Those completing one or more years receive a **Certificate in Practical Ministry** indicating the duration of involvement.

Classes are conducted in English. The faculty comprises of both trained and anointed teachers of the Word. All faculty and students have access to APC's Study Centre and Library (SC&L). The SC&L contains books, teaching tapes, videos, VCDs/DVDs and music CDs.

## Publications from All Peoples Church

A Church in Revival
Ancient Landmarks
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders—Vol. 1
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Open Heavens
Our Redemption
The Conquest of the Mind
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
Understanding the Prophetic
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace

**Gospel Booklets**

He is Here
Love That Is Deeper Than Love Itself
What Can Wash Away My Sins?

## ऑल पीपुल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपुल्स चर्च में हमारा दर्शन यह है कि हम बंगलौर शहर में नमक और ज्योति बनें और भारतवर्ष तथा संसार के अन्य राष्ट्रों के लिए एक आवाज बनें।

**यह हमारी ओर से आपके लिए एक भेंट है! यह मुफ्त है!**

हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा आपको आशीष मिली होगी।

हजारों प्रतियाँ आप जैसे लोगों को मुफ्त में बांटी जाती हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे आर्थिक सहयोगी बनें ताकि हम परमेश्वर का वचन बहुतों के साथ बांट सकें। आपके लगातार आर्थिक अनुदानों से हमें परमेश्वर का वचन अन्य लोगों तक पहुंचाने में सहायता मिलेगी। जैसा प्रभु आपको अगुवाई करे, आप ऑल पीपुल्स चर्च के सहयोगी बन सकते हैं। आप अपने दान चैक / डिमाण्ड ड्राफ्ट / मनीआर्डर ''ऑल पीपुल्स चर्च, बंगलौर'' के नाम भेज सकते हैं।

जब आप हमें लिखें तो आप अन्य प्रकाशनों हेतु भी निवेदन करें। हमें यह भी लिखें कि इस पुस्तक ने आपकी कैसे सेवा की है, साथ ही अपने प्रार्थना निवेदन और टिप्पणी भी भेजें। आप हमसे निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं:

**ऑल पीपुल्स चर्च**

सोभा जेड A216

जक्कूर, बंगलौर-560064

कर्नाटक, भारत

फोन + 91-80-23544328

ईमेल : contact@apcwo.org

बेबसाइट : www.apcwo.org

# भारत में ऑल पीपुल्स चर्च

इस समय ऑल पीपुल्स चर्च की शाखाएं भारत में निम्नलिखित शहरों में हैं :

ऑल पीपुल्स चर्च–बंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–थोकोटू, मंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–कल्याण, मुम्बई (महाराष्ट्र)

ऑल पीपुल्स चर्च–विशाखापटनम (आन्ध्र प्रदेश)

ऑल पीपुल्स चर्च–सोनितपुर (आसाम)

ऑल पीपुल्स चर्च–बेरहामपुर (उड़ीसा)

ऑल पिपुल्स चर्च - नागपुर (महाराष्ट्र)

समय समय पर पूरे भारत में नई कलीसियाओं की स्थापना की जा रही है। वर्तमान सूची और ऑल पीपुल्स चर्च की सम्पर्क सूचना प्राप्त करने हेतु कृपया हमारे बेबसाइट www.apcwo.org पर देखें अथवा contact@apcwo.org पर ईमेल भेजें।

# क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

**ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।**

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अतः हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी ( भुगतान ) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

**जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी** (प्रेरितों के काम 10:43)।

**यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा** (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

*प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।*

*आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।*

*आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।*

*प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!*

नोट

नोट